विकासवाद के दो विचार?

1859 में छपी चार्ल्स डार्विन की पुस्तक *ओरिजिन ऑफ़ स्पेसीस* के प्रकाशन से विज्ञान के साथ बाइबल के सम्बन्ध का एक नया युग आरम्भ हो गया। उस पुस्तक से यूरोप का विभाजन हो गया: 1859 से पहले विज्ञान से जुड़े लगभग सभी लोग संसार को एक सृष्टिकर्त्ता के योजनाबद्ध कार्य के रूप में मानते थे; 1859 के बाद विज्ञान से जुड़े लगभग सभी लोग धीरे-धीरे यह विश्वास करने लगे हैं कि यह संसार एक उद्देश्यरहित दुर्घटना है।

I. जैविक विकास

लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में प्रसिद्ध पुस्तकें रखी गई हैं। उनमें डार्विन की उस पुस्तक के प्रथम संस्करण की प्रति है जिस में लिखा है: ''डार्विन की व्याख्या कि कैसे जीवित वस्तुओं के विशाल प्रकार प्राकृतिक जगत के बारे में मनुष्य के विचार विकसित हुए।'' विकासवादी लोगों ने सृष्टिकर्त्ता के रूप में परमेश्वर को नकारकर इस बात को स्वीकार किया है कि प्रकृति (जिसका मूल अज्ञात है) धीरे-धीरे, स्वाभाविक चयन से पशुओं से मनुष्य जाति में विकसित हुई है।

दुर्घटना के रूपांतरण[1]

प्राकृतिक चयन को एक ''व्यवस्था'' कहने का अर्थ इसकी चापलूसी करना है। पूरी तरह से एक घटना या दुर्घटना को ''संयोग'' तो कहा जा सकता है, परन्तु ''व्यवस्था'' नहीं। इसके अतिरिक्त, यदि प्राकृतिक दुर्घटनाओं से योग्यतम की उत्तम जीविता (सबसे शक्तिशाली ही जीवित रह सकता है) समझ में आ भी जाए, तो भी यह समझाने के लिए कि संयोग से सहायक परिवर्तन अर्थात एक स्नायु, एक रसवाहिका नाड़ी, एक पेट, योजनाबद्ध ढंग से लगे दो फेफड़े, या एक मस्तिष्क (दिमाग़ रहित प्रकृति से बना) कैसे और क्यों हुए। सत्रहवीं शताब्दी के अंग्रेज़ दार्शनिक हैनरी मोर का उदाहरण आज भी अनुकूल है: ''हमारे सामने के दांत छैनी की तरह क्यों काटते हैं, जबकि पीछे के दांत चबाने का काम करते हैं?'' संयोग से जीवित रहने की बात इतने छोटे से प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती।

किसी पेड़ या जन्तु को अपनी जाति की सीमा को पार करते नहीं देखा गया। केवल

एक जाति में ही भिन्नताएं पाई जाती हैं, और उस जाति के बाहर नया वंश नहीं बनाया जा सकता। यदि संयोग का इन सब बातों पर नियन्त्रण होता, तो खच्चर से एक नई प्रजाति पैदा की जानी चाहिए। उनका बांझपन प्रकृति के पक्के नियमों की ओर संकेत करता है, न कि संयोग के रूपांतरण की ओर।

बीज बोना हो या फिर चांद पर जाना, मनुष्य के लिए योजनाबद्ध ढंग से और सावधानीपूर्वक काम करना ज़रूरी है। परन्तु आज बहुत से विद्वान यह दावा करते हैं कि दिमाग़ रहित प्रकृति, बिना किसी योजना के संयोग से ही जीवन में बदल गई। परन्तु एक नास्तिक विकासवादी यह प्रमाणित करने का प्रयास नहीं करता कि ''क्या हम यह मान सकते हैं कि यह संसार इकट्ठी की हुई गलतियों का परिणाम है ? मैं मानता हूं कि इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही कठिन है।''[2]

जन्मजात परिवर्तन

कुछ लोगों का मानना है कि डार्विन की शिक्षा (प्रकृति में संयोग) हॉलैण्ड के वनस्पति शास्त्री ह्युगो डी. वरीस और उसके जातीय परिवर्तन के अध्ययनों से मिले विज्ञापन के बिना अब तक समाप्त हो जाती। उसने दिखाया कि सभी प्रजातियों में (जाति, श्रेणी या परिवारों का नहीं) अनुवांशिक परिवर्तन हो ही जाते हैं। फिर यह आशा बढ़ी कि इनमें डार्विन की थ्योरी की एक मूल कमी को पूरा कर लिया गया था। डार्विन ने यह समझाने का प्रयास किया था कि सामर्थी पशु अपने आपको कैसे जीवित रख पाए थे, परन्तु वह यह अनुमान बिल्कुल नहीं लगा सका था कि वे पशु बने कैसे। यह उम्मीद भी की गई थी कि विभिन्न प्रजातियों में पाए जाने वाले अंतरों से यह प्रमाणित हो जाएगा कि पौधों और जन्तुओं की विभिन्न प्रजातियां कैसे अस्तित्व में आईं। परन्तु खोज से यह पता चलने पर कि इन परिवर्तनों में (जो हमेशा अपर्याप्त और नगण्य होते हैं) निराशा हुई कि विकास की रेखा प्रजातियों के सुधार की ओर आगे नहीं बढ़ती। इसके बजाय वंशानुगत भिन्नताएं सामान्यतया यदि विनाशक नहीं तो हानिकारक तो हैं ही। डी. वरीस की खोज डार्विन की शिक्षा के समर्थन के लिए पर्याप्त थी। फिर भी थोड़े में ही बहुत अधिक कल्पना करके एक असफल हो रही प्रणाली में नया आत्मविश्वास फूंका गया।

परिवर्तनों की ''किस्म'' की रेखा को पार करने और प्रजातियों के विकास को दिखाने तक वे जैविक विकासवाद के समर्थन में एक कमज़ोर कड़ी हैं। फिर तो वास्तविक अर्थ में विकासवाद का कोई प्रमाण नहीं है। विकासवाद में विश्वास रखने वाले एक व्यक्ति ने लिखा है, ''जैविक विकासवाद को एक निश्चितता के रूप में स्वीकार करने का हमें कोई अधिकार नहीं है।''[3] उसने आगे लिखा:

> यह सत्य है कि हमें विकासवाद के प्रबंध का पता न तो लमारकिज़्म [अर्थात वंशागत परिवर्तनों से नहीं, बल्कि वातावरण से वांछनीय मीरास] न ही परिवर्तनों से चला इसलिए हम में यह समझने का साहस होना चाहिए कि हमें इस प्रबंध

का कुछ भी पता नहीं है।[4]

विकासवाद का अविश्वसनीय प्रमाण जीन रोस्टेंड की पारिभाषिक शब्दावली में भी मिलता है। उसने विकास के कालों को ''पोलिजेनसिस,'' ''ओलिगोजेनसिस'' और ''अजेनसिस'' का नाम दिया।[5] उसके इन बड़े-बड़े शब्दों से केवल इतना ही पता चलता है कि प्रकृति में विकास का एक समय था; फिर यह कम हुआ, और अब बिल्कुल नहीं है। इसके अलावा, यद्यपि हम जन्मजात परिवर्तनों से जिराफ की गर्दन के इतना लम्बा होने को उपयोगी मान सकते हैं, परन्तु बहुत से अंगों ने हज़ारों जन्मजात परिवर्तनों तक प्रतीक्षा नहीं की होगी। गर्दन के इतना लम्बा होने की ''साधारण'' प्रक्रिया के विपरीत, बहुत से कल्पित परिवर्तन ऐसे हैं जो एक ही पीढ़ी में बढ़ सकते थे वरना वह प्रजाति मिट जाती। मकड़ी द्वारा जाला बनाने की यंत्र निर्माण कला कोई वैकल्पिक सामान नहीं, न ही शुक्र ग्रह के Flytrap का ''मुंह'' और न ही किसी जन्तु के प्रजनन अंग है। यदि ये अंग एक पीढ़ी में अपना काम सही ढंग से नहीं करते, तो अगली पीढ़ी अस्तित्व में ही नहीं आएगी।

> इस सफलता को समझने के लिए इन अंगों या अंगों की जटिल प्रणाली की आठवीं या अठारहवीं विकसित स्थिति की कल्पना करनी पड़ेगी। फिर लगता है कि क्रियाशील रूप में इस पूरी प्रणाली का किसी समय संयोग से बन जाना असंभव है। और इसके बाद भी किसी भी भाग के कार्य करते रहने के लिए समस्त कार्यप्रणाली का होना आवश्यक है।[6]

एक ततैया के किसी टिड्डे को पकड़कर डंक मारने पर जैविक विकासवाद को भी डंक लग जाता है। उस ततैया की संतान का भोजन उस डंक पर निर्भर करता है जो वह उस टिड्डे को मारती है। उसके बच्चे उसके डंक बनने और मजबूत होने के लिए हज़ारों सहायक परिवर्तनों की प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे। डंक लगने से टिड्डा बेहोश ही होता है, मरता नहीं। फिर ततैया उस टिड्डे को गाड़कर उसके आस-पास अण्डे दे देती है। वह नि:सहाय शिकार अजन्मे ततैयों का भोजन बनने के रूप में प्रतीक्षा करता है जिसे वह मां कभी नहीं देखेगी, क्योंकि वह अपने बच्चों के जन्म से पहले ही उस गड्ढे को ढांपकर छोड़ जाती है। पहली मादा ततैया को अपनी प्रजाति को बचाये रखने के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी यही काम करते रहना ज़रूरी था।

एक बहुत बड़ी परियोजन

डार्विन की पुस्तक के जल्द बाद ब्रिटिश नौ-सेना विभाग ने *चैलेन्जर* जहाज़ की चार वर्षीय समुद्री यात्रा पर बहुत सा धन खर्च किया। 1872 से, इसके नाविक दल विकासवाद को प्रमाणित करने के लिए टूटी हुई कड़ियों की समुद्र की तहों तक खोज करने लगे। उनका मत था कि पृथ्वी के तल पर नहीं परन्तु ''युगों से अपरिवर्तित समुद्र के गहरे निर्जन स्थानों

से'' जीवित कंकाल, या वास्तविक टूटी हुई कड़ियां मिल जाएंगी जो अभी भी वहीं हैं। उस समय समुद्र के तल की खोज करने के प्रयास में यह सबसे अधिक महत्वाकांक्षी परियोजना थी। पानी पर तैरने वाली इस प्रयोगशाला में प्रकृतिवादी कर्मियों ने 69,000 समुद्री मील यात्रा की, सैकड़ों बार समुद्र की गहराई नापी, और उसके परिणाम लिखने के लिए पचास पुस्तकें लिख डालीं। इंग्लैंड के थॉमस एच. हक्सले और स्विट्ज़रलैंड में जन्मे महान प्रकृतिवादी लूइस अगासीज़ आश्वस्त थे। ''शुरू में केबिन में काम करने वाले लड़के भी यह देखने के लिए उमड़ पड़ते थे कि चार मील तक नीचे गई रस्सी समुद्र में से क्या निकालकर लाती है।'' परन्तु धीरे-धीरे दर्शकों की संख्या कम होती गई। यहां तक कि उस वैज्ञानिक दल के सदस्यों की दिलचस्पी भी, विशेष तौर पर रात के भोजन के समय नीचे से गार आने पर कम होती गई। प्रत्येक कटलफिश को यह देखने के लिए दबा दबाकर देखा जाता था कि कहीं यह दूसरी मछलियों से अलग तो नहीं। चार साल बाद इस विशेष जल यात्रा के निर्देशक सर चार्ल्स थॉमसन निराश हो गए। इस परियोजना से केवल एक ही बात साबित हुई थी कि कुछ ऐसे जन्तु मिल गए जिनके बारे में पहले केवल यही माना जाता था कि उनके कंकाल ही बचे हैं।[7]

बाइबल के साथ तुलना

बाइबल में विश्वास करने वालों को पहले ही यह अहसास था कि जैविक विकास और पवित्र शास्त्र दोनों के किनारे अलग-अलग हैं। विकासवाद की शिक्षा के अनुसार मनुष्य के पूर्वज जानवर थे, परन्तु बाइबल मनुष्य को सीधे भूमि की मिट्टी से परमेश्वर की रचना बताती है (उत्पत्ति 2:7)। विकासवाद की सोच के अनुसार आदमी की पत्नी के पूर्वज जानवर थे, जबकि उत्पत्ति की पुस्तक में बाइबल उसे सीधे पुरुष की पसली से निकला बताती है (उत्पत्ति 2:22)। विकासवाद की शिक्षा मनुष्य के अस्तित्व को जानवरों से बना बताती है जो अपनी ही नस्ल के अनुसार नहीं बढ़ते, जबकि बाइबल जानवरों के विषय में बताती है कि वे अपनी ही नस्ल के अनुसार बढ़ते हैं (उत्पत्ति 1:21, 25)। विकासवाद की शिक्षा मनुष्य को जानवर से विकसित हुआ बताती है, जबकि बाइबल उसे परमेश्वर के स्वरूप पर परन्तु स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया हुआ बताती है (उत्पत्ति 1:26, 27; भजन 8:1-5)। विकासवादियों की शिक्षा है कि मनुष्य पूर्णतया नाशवान है, परन्तु बाइबल उसे अविनाशी बताती है (उत्पत्ति 5:24; मत्ती 10:28)। विकासवाद की शिक्षा के अनुसार इस सृष्टि का मूल अज्ञात है और यह बिना किसी की अगुआई के अस्तित्व में आई है, जबकि बाइबल एक सृष्टिकर्त्ता को दिखाती है जो सृष्टि की योजना बनाकर उसे अगुआई देता है (उत्पत्ति 1:1-5)।

ये दो बातें परमेश्वर में विश्वास रखने के इतना विरुद्ध थीं कि जैविक विकासवाद में विश्वास करना और आत्मा के अविनाशी होने में और परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करना असम्भव हो गया। जर्मन जीवविज्ञानी अरस्ट हेकल का दावा था ''मनुष्य के अन्य स्तनधारियों की शृंखला से विकसित होने की बात तो सिद्ध हो गई थी, परन्तु आत्मा के अमर

होने, स्वतन्त्र इच्छा और परमेश्वर में विश्वास की बात ने अपना अन्तिम समर्थन खो दिया।''[8] जूलियन हक्सले का दावा था कि जीवन के विकास में ''किसी अलौकिक शक्ति के लिए कोई स्थान नहीं'' है।[9] प्रोफेसर जे. विलिस स्टोवल और हॉवर्ड ई. ब्राउन ने लिखा है कि जैविक विकास ''के कारण और वास्तिविक क्रिया अभी भी अस्पष्ट है'' परन्तु तथ्य ''अब बहस के योग्य नहीं है।''[10]

उनके वक्तव्य में इस चालाकी पर ध्यान दें: ''वास्तविक'' शब्द का इस्तेमाल यह प्रभाव देता है कि विकासवाद कार्य कर रहा है परन्तु दिखाई नहीं देता; और ''अभी भी'' शब्द के इस्तेमाल का अर्थ है कि प्रगति हो रही है और क्षण भर के लिए अस्पष्टता समाप्त हो जाएगी। प्रोफेसर हुडसन होगलैण्ड ने लिखा है ''प्राकृतिक चयन से जीव वैज्ञानिक विकास अब एक थ्योरी ही नहीं बल्कि इतना सम्भव हो गया है कि इसकी मान्यता पर बहस करना व्यर्थ है।''[11] प्रोफेसर हैनरी एम. मोरिस के शब्द कितने भिन्न हैं: ''विकासवाद की मान्यता के लिए, प्रमाण का एक भी अंश न तो विज्ञान में है और न पवित्र शास्त्र में।''[12]

II. ईश्वरवादी विकासवाद

एक समझौता

यह दावा करते हुए कि परमेश्वर की सृष्टि विकास की प्रक्रिया के द्वारा अस्तित्व में आई, विकासवाद और बाइबल में समानता बनाने के प्रयास किए गए हैं। ''ईश्वरवादी विकासवाद'' की बात उन लोगों में प्रसिद्ध है जो बाइबल के साथ-साथ वर्तमान वैज्ञानिक अटकलों को बनाए रखना चाहते हैं। ऐसा समझौता होना असम्भव है।

यदि सृष्टि विकास की प्रक्रिया से अगुआई रहित, अपने आप अस्तित्व में आई है, तो परमेश्वर को बीच में डालना अनावश्यक है। यदि मनुष्य विकसित ही हुआ है, अर्थात पूर्णतया नश्वर और केवल एक जानवर ही है, तो पाप और प्रायश्चित की शिक्षाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। ओलिवर लॉज ने कहा था, ''विज्ञान से हमें पता चलता है कि मनुष्य तो पाप में गिरा ही नहीं अर्थात उसने तो विकास ही किया है।'' एक उन्नति करने वाले जानवर की प्रशंसा करनी चाहिए क्योंकि इसे प्रायश्चित करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जानवर पाप नहीं कर सकता, इसलिए यदि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप पर नहीं बल्कि वानर के स्वरूप पर बनाया गया है तो सारा धर्म फालतू ही है। विकासवाद की शिक्षा ''बड़ी मछली छोटी को खा जाती है'' नीति अर्थात सामर्थी ही जीवित रह सकता है पर आधारित है; परन्तु मसीहियत का आधार प्रेम का प्रतिनिधित्व करना है।

''ईश्वरवादी विकासवाद'' एक विरोधाभास है। अनजाने में और अचानक हुए विकासवाद में एक सहारे के रूप में परमेश्वर को डालना उतना ही असम्भव है जितना किसी ''ईमानदार'' को बेईमान कहना। ईश्वरवादी विकासवाद के अनुसार, एक सम्मानप्रद प्रथम कारण के रूप में, परमेश्वर ने सृष्टि का आरम्भ किया और फिर इसे इसके हाल पर छोड़ दिया। इस प्रक्रिया को दिमाग़रहित बताया जाता है, बेशक परमेश्वर को इस प्रणाली

का जनक माना जाता है। परन्तु ईश्वरवादी विकासवादी लोग दिमाग़रहित संयोग या प्रकृति में दुर्घटनाओं या जीनों में अद्‌भुत जीवों के बारे में खुलकर नहीं बोलते। वे आदम और हव्वा द्वारा जानवरों को पालने की कल्पना नहीं करते, परन्तु ''अचानक आने वाले विकासवाद,'' ''उन्नतिशील रचनावाद,'' या ''वैज्ञानिक आविष्कार'' की बात करते हैं।

ईश्वरवाद का आत्मसमर्पण

परमेश्वर को उद्देश्यरहित विभिन्नताओं और संयोग[13] से बनने वाली वस्तुओं का जन्मदाता बनाने का प्रयास करने वाले लोग सच्चे ईश्वरवाद के उद्देश्य में सहायता नहीं कर रहे। अनियमित रूप से बने, आकस्मिक जीवन के आरम्भ में परमेश्वर को नाममात्र का शासक बनाना बहुत अधिक सम्मानसूचक नहीं है। ऐसा विचार मनुष्य को स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाए हुए के रूप में नहीं बल्कि कष्ट और गलती से छुट पुट के रूप में चित्रित करता है। संयोग के लाखों वर्षों तक होने के बाद, मनुष्य परमेश्वर के अपने स्वरूप पर उसकी रचना नहीं बल्कि भाग्य से हुई एक घटना होता।

वास्तविक विकासवाद में मनुष्य के आत्मा के लिए कोई स्थान नहीं है। विकासवादियों के अनुसार, यह सृष्टि पूरी तरह से एक यांत्रिकी है। ऐसा भौतिक विज्ञान और मनोविज्ञान दोनों में बड़ी दृढ़ता से माना जाता है। विकासवादियों द्वारा प्रस्तुत किए गए मनुष्य के चित्र पर विचार करें: मनुष्य केवल वही होता जो वह बनता था। उसका दिमाग़ बनाने वाले रसायनों ने उसके प्रत्येक विचार को निर्धारित करता। न उसे कोई स्वतन्त्रता होती, न कोई मानवीय उद्देश्य। संयोग से जानवर का जीन बदलने पर ही वह मनुष्य बनता।

कितने सौभाग्य की बात थी कि वही परिवर्तन जिसे आदमी को अस्तित्व में लाने वाला माना जाता है, स्त्री को संसार में लाने का कारण बना! ईश्वरवादी विकासवादियों के अनुसार, आदम और हव्वा जानवरों से उत्पन्न हुए अद्‌भुत जीव थे।

फिर विचार करने पर, क्या यह भाग्य की बात थी कि आदम के समय में ही एक अद्‌भुत मादा जीव बन गया। मृत्यु के बाद (विकासवादी लोग मृत्यु पश्चात जीवन में विश्वास नहीं करते), क्या अच्छा न होगा कि मनुष्य का अस्तित्व न हो? जीवन में विकसित होने वाले मृत पदार्थ की कोई अभिलाषा क्या हो सकती है? क्या अन्त में परमेश्वर ने आगे आकर, जीवन में और विकासवाद में कोई उद्देश्य दे देना था और किसी एक जानवर के पुत्र अर्थात एक अद्‌भुत त्यागे हुए जीव को स्वर्ग में ले जाना था? क्या ईश्वरवादी विकासवादी लोग स्वर्ग में विश्वास रखते हैं? यदि हां, तो यह किसी भी प्रकार विकासवाद की शिक्षा के कारण नहीं बल्कि उसके विपरीत है।

लुड्‌विग फियुरबैक (1804–1872) किसी भी प्रकार मसीहियत का मित्र नहीं था, परन्तु वह एक अन्तरदृष्टि वाला व्यक्ति था: ''जिसे आज नास्तिकवाद कहा जाता है, कल वह धर्म बन जाएगा।''[14] नास्तिकवाद और विकासवाद दोनों अपनी अटकलों के आरम्भ से ही हमबिस्तर रहे हैं। आज हमारे समय में, कुछ धर्मशास्त्री ईश्वरवादी विकासवादी बन गए हैं, इस प्रकार उन्होंने नास्तिकवाद का पक्ष लेना छोड़ा नहीं है। धर्म में आज अधिकतर

प्रचलन नास्तिकवाद थियोलॉजी का है जिसके शब्दों में विरोधाभास है, परन्तु यह फियुरबेक की भविष्यवाणी का पूरा होना है।

एक या फिर दूसरा

विकासवाद (नास्तिकवाद या ईश्वरवाद) और बाइबल परस्पर विरोधी हैं। विकासवाद और बाइबल के बीच सहमतियों की सूची बनाने का प्रयास केवल चर्चा को उलझाने के लिए है। ऐसा एक प्रयास इस कथन में मिलता है: ''उत्पत्ति की पुस्तक और जीव विज्ञान दोनों ही शून्य और रिक्ति से आरम्भ होते हैं, दोनों ही साधारण से जटिल में आगे बढ़ते हैं और दोनों का चरम मनुष्य ही है।'' परन्तु यह कथन बनावटी ख्वाहिश है। विकासवाद कहता है कि घास पृथ्वी पर समुद्र की घास-पात और पुष्पहीन वनस्पति से 30 करोड़ वर्ष बाद के विकास काल में पृथ्वी पर आई, जबकि बाइबल जीवन को घास के साथ ही आरम्भ हुआ बताती है (उत्पत्ति 1:11-13)।

वास्तव में विकासवाद की शिक्षा को बाइबल से मिलाने के लिए बाइबल को बदलना आवश्यक है। यह प्रयास हो चुका है। बाइबल की उत्पत्ति की पुस्तक का एक नया वैज्ञानिक संस्करण लिखा गया है क्योंकि ''आदम और हव्वा का सम्पूर्ण विचार ही विकासवाद के अनुकूल नहीं है।'' डरहम यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक और चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के सदस्य डॉ. ब्राइन पैपलेन ने अपने संस्करण में लिखा है: ''सो मनुष्य परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उच्च जन्तुओं से नर और नारी में विकसित हुआ।'' डॉ. पैपलेन ने एक और परिवर्तन किया जो इस प्रकार है: ''और परमेश्वर ने कहा, पदार्थ और ऊर्जा मिलकर परमाणु बनाएं और परमाणु मिलकर और इकट्ठे होकर ठोस और तरल बन जाएं और सितारे और ग्रह लाखों में विकसित हो जाएं; और ऐसा ही हो गया।''[15]

एक दोषपूर्ण आशा

डार्विन ने दो एक वंशीय समूहों में कुछ जानवरों के जीन खोजने, मनुष्य और उसके जानवर पूर्वजों के बीच की ''खोई हुई कड़ी'' को खोजने की आशा से, ग्लोब अर्थात पृथ्वी, समुद्र और वायु की खोज की। दक्षिणी अर्जेंटीना के एक इलाके, पैटागोनिया में डार्विन को भारतीयों के एक कबीले का पता चला जो इतना आदिमानव जैसा लगता था कि उसने सोचा कि उन्हें सही और गलत की समझ नहीं थी। यदि मनुष्य होने के बावजूद भी उन्हें सही या गलत होने की समझ नहीं थी तो वह अवश्य ही मनुष्य और जानवर के बीच की कड़ी का एक उदाहरण होगा। नेवी के एक सेवानिवृत्त अधिकारी, गार्डिनर दक्षिण अमेरिकी मिशनरी सोसायटी संगठित करके निजी रूप से इंग्लैंड से पैटागोनिया गए। उन भारतीयों को नया जन्म पाने, मसीही बनते देखने के लिए गार्डिनर तो नहीं रहा, परन्तु उसके उत्तराधिकारी अन्ततः उन भारतीयों में परमेश्वर के बारे में सिखाकर एक नैतिक क्रांति लाने में सफल रहे। डार्विन ने आश्चर्य माना और उनकी प्रशंसा भी की। उसने उस सोसायटी के लिए दान भेजा और उसका सम्माननीय सदस्य बनने का निवेदन भी किया।[16]

विकास न करने वाला संसार

आधुनिक विज्ञान की एक और अटकलबाज़ी विकासवाद का विरोध करना है। विकास करने वाले, उन्नतिशील संसार का विचार धीरे-धीरे अपने आप समाप्त (क्षीण) होने वाले संसार के आधुनिक विचार के साथ मेल नहीं खाता। इसकी तुलना चाबी दी हुई घड़ी से की जाती है जो दोबारा चाबी दिए बिना ही अपने आप चलती रहती है। सितारे धीरे-धीरे परन्तु सुनिश्चित तौर पर नष्ट हो रहे हैं और अपनी ऊर्जा अंतरिक्ष में फैंक रहे हैं। इस संसार का विघटन हो रहा है। विकासवाद को दिखाने के बजाय, प्रकृति नाश को दिखा रही है। यदि प्रकृति केवल एक ही दिशा की ओर चले और वह दिशा क्षय की हो, तो यह समझना कठिन होगा कि किसी भी प्रकार का विकासवाद (नास्तिकवादी या ईश्वरवादी) कैसे कायम रह सकता है।

पाद टिप्पणियां

[1]इसमें से अधिकतर सामग्री ह्युगो मेकोर्ड, *द क्रेडेबिलिटी ऑफ़ क्रिएशन* (नेशविल्ले: 20th, पृ. न.) से ली गई है। [2]जीन रोस्टैंड, *ए बायोलॉजिस्ट 'स व्यू* (मैलबोर्न: विलियम हैयनमैन, लि., 1956), 16, *Ce Que Je Crois* (पैरिस: एडिशन्स बर्नार्ड ग्रैसेट, पृ. न.) से अनुदित। [3]वहीं, 10. [4]वहीं, 7-18. [5]वहीं, 20. [6]विलियम एच. डेविस, *फिलॉसफी ऑफ़ रिलिजन* (अबिलेन, टैक्स.: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1969), 23. [7]लोरेन आइस्ले, *द इमेंस जर्नी* (न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस, 1962), 27-29. [8]एलफ्रैड डब्ल्यू. मॅकैन, *गॉड-ऑर गोरिल्ला* (न्यूयॉर्क: डेविनअडेयर कं., 1922), 310-11. [9]जे. डी. थोमस, *फैक्ट्स एण्ड फेथ* (अबिलेन, टैक्स.: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1965), 126. [10]जे. विलिस स्टोवल एण्ड हॉवर्ड ई. ब्रोन, *द प्रिंसिपल्स ऑफ़ हिस्टोरिक जियोलॉजी* (बोस्टन: गिन्न एण्ड कं., 1954), 48.

[11]हुडसन होगलैंड, ''सम रिफलेक्शंस ऑन साइंस एण्ड रिलिजन,'' *साइंस पौंडर्स रिलिजन* (न्यूयॉर्क: अपलिटन-सैंचुरी-क्रोफ्टस, 1960), 24. [12]फिलिप्प ई. हियुगस, ''करंट रिलिजियस थॉट,'' *क्रिश्चियनिटी टुडे* (25 सितम्बर 1964): 61. [13]बैनेडिक्ट डि स्पिनोज़ा, थॉमस हौबस, और सिग्मण्ड फ्रियूड की पुस्तकों में इसकी झलक मिलती है। [14]जॉन हिक्क, सं., *क्लासिकल एण्ड कंटेम्परेरी रीडिंग्स इन द फिलॉसफी ऑफ़ रिलिजन* (एंगलवुड क्लिफस, न्यू ज.: प्रेन्टिस हॉल, 1965), 32. [15]ऐसोसिएटिड प्रैस, लंदन, 18 जून 1962. [16]रॉबर्ट एच. ग्लोवर, *द प्रोग्रेस ऑफ़ वर्ल्ड-वाइड मिशन्स* (न्यूयॉर्क: हारपर एण्ड ब्रदर्ज़, 1925), 282-83.